डॉ० अम्बेडकर और बौद्ध धर्म

डॉ० राघवेन्द्र कुमार*

भारतीय तत्वचिन्तन के क्षेत्र में बुद्ध के धम्म–दर्शन का सर्वाधिक महत्व है। धम्म–दर्शन मानव जीवन के लक्ष्य की परमोदात्त अभिव्यकित है। वह उन तात्विक उलझनों से मुक्त रहा, जिनमें भारतीय धर्म एवं दर्शन की समस्त परम्परा उलझी रही। बौद्ध धर्म तथा दर्शन एक दूसरे पर अवलम्बित है। दोनों में शील साधना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शील में संप्रतिष्ठित होकर, बौद्धानूयायी मानववादी भावना से ओत–प्रोत होकर आगे बढ़ता है।

डॉ० अम्बेडकर भी इसी भावना से अभिभूत होकर बुद्ध की शरण में गये। उन्होंने पाया कि बुद्धिज्म मानव को शील सम्पनन, प्रज्ञावन, सुसमाहित तथा मेघावी बनाता है जो जीवन की दुस्तर बाढ़ को पार कर सकने में सक्षम होता है। बौद्ध धर्म और दर्शन में यह देखना है कि आदमी को शील व सदाचरण की रक्षा करनी चाहिए ताकि समाज में सम्यक सम्बन्धों की स्थापना और न्यायोचित व्यवस्था हो सके।

बौद्ध धम्म–दर्शन प्रज्ञा पर आधारित है अर्थात् जगत् की सही समझ जो मानव के हितार्थ उपयोगी हों। साथ ही बौद्ध धम्म दर्शन शील प्राण है। इन दो चीजों–प्रज्ञा तथा शील का अनुपम मिश्रण ही बाबा साहेब अम्बेडकर को बुद्ध की ओर ले गये। प्रज्ञा मार्ग–दर्शक होती है और शील ही लोक में कल्याणकारी है। इन दोनों के बिना मानव समाज का कल्याण सम्भव नहीं है। डॉ० अम्बेडकर ने अपने महान ग्रन्थ 'भगवान् बुद्ध और उनका धम्म' में यह लिखा कि प्रज्ञा वह निर्मल बुद्धि है जो 'मिथ्या–विश्वासों'–ईश्वर में आस्था, अमर आत्मा, आवागमन, अदृष्ट, नरक–स्वर्ग से आदमी को मुक्त करती है ओर उसे उचित–अनुचित, शुभ–अशुभ, कुशल–अकुशल का बोध कराती है। प्रज्ञा का सही उपयोग के साथ व्यवहार में निहित है। शील वह सदाचरा है जो पंच–शील, अष्ट–शील, दस–शील आदि के मार्ग पर ले जाता है। प्रज्ञा और शील का मिश्रित रूप बौद्ध जीवन पद्धतियों का सार–तत्त्व है। इसी बात को डॉ० साहेब ने सहृदय स्वीकार किया। शील से प्रज्ञा और प्रज्ञा से शील का विशेधन होता है। स्पष्टतया शील तथा प्रज्ञा का अविनाभाव सम्बन्ध है। समाज का यही धर्म है, यही आधार है जो सभी मानव प्राणियों को सन्मार्ग पर ले जाता है। जो आदमी शील और प्रज्ञा से सम्पन्न होता है। उसे जीवन में उत्कृष्टता की प्राप्ति होती है। ऐसा आदमी समाज की धरोहर होता है, क्योंकि मनुष्य के लिए प्रज्ञा तथा शील उत्तम रत्नों के समान हैं। डॉ० अम्बेडकर ऐसे ही मनुष्यों को चाहते थे, न कि उन लोगो को जो धार्मिक आडम्बरों में व्यस्त सामान्यजन को ठगते हैं।

उन्होंने सोचा कि जीवन के दुर्जय संग्राम पर विजय पाने के लिए, समता समाज स्थापित करने के लिए और कल्याणकारी जीवन जीने के लिए बौद्ध धम्म–दर्शन की भावना उपेक्षित है। सत्य, धर्म, धृति, त्याग, श्रद्धा, समता, शील वीर्य्य एवं प्रज्ञा से सम्पन्न आदमी ही सच्चा मानव प्राणी हो सकता है। यथार्थ स्थिति को जानना सतयस है, सदाचरण ही धर्म, धृति स्थितिप्रज्ञता है, त्याग परार्थ की भलाई है, दूसरों के प्रति मान–सम्मान की भावना श्रद्धा है, भाई–चारे की भावना समाता है, शील दोष विनाशक मार्ग है, कुशलकर्म में चित्त के अभ्युत्साह का नाम दीर्य्य है और प्रज्ञा वह प्रकाश है जहां सभी मिथ्या विश्वासों का निवारण हो जाता है। इस प्रकार बौद्ध धम्म–दर्शन का मूलाधार तात्विक न होकर, मानववादी है जिसे डॉ० अम्बेडकर न अत्याधिक पसन्द किया और यही कारण है वह सभी मजहबों की ओर आकर्षित न होकर, बुद्ध के धम्म–दर्शन में लीन हो गये। तत्वचिन्तन की भिन्नता के कारण, बौद्ध–दर्शन के अनुयायी तथा मर्मज्ञ कुछ दार्शनिक सम्प्रदायों में विभक्त हो गयें उनके चिन्तन और विधियों में भी भिन्नता आई। लेकिन डॉ० अम्बेडकर ने तो बुद्ध के मानववादी चिन्तन को सर्वाधिक महत्त्व दिया, वह पक्ष जो विद्यमान परिस्थितियों मे दलित और दुःखी लोगों को मार्ग–दर्शन करके उन्हें सुख शान्ति प्रदान करने वाला है।

डॉ० अम्बेडकर ने मिथ्या दृष्टि को नकार कर बुद्ध की सम्यक दृष्टि को धम्म–दर्शन का मूल माना, क्योंकि सम्यक दृष्टि ही संसार के दुःखों से मुक्त होने के मार्ग का उद्घाटन करती है। आज भी बौद्ध धम्म–दर्शन सामाजिक तथा आध्यात्मिक, नैतिक और धार्मिक क्रांति के लिए उपयोगी है। भारतीय समाज में, जहां सभी मजहब एक दूसरे के प्रतिरोध बन गये हैं, राजनीतिक तथा साम्प्रदायिक झगड़ों में उलझे हुए हैं, वहां डॉ० अम्बेडकर की दृष्टि में, एकमात्र धर्म जो आदमी को 'न्यायप्रिय, प्रज्ञावान, और शीलवान् बना सकता है।

वह बौद्ध धर्म है। वह सभी मानव प्राणियों का समान रूप से हित करने वाली एक जीवन पद्धति है बौद्ध धर्म की आधारभूत दार्शनिक मान्यताएं, जिन्हें डॉ० अम्बेडकर ने स्वीकार किया, इस प्रकार है। सर्वप्रथम डॉ० अम्बेडकर ने बौद्ध दर्शन मे अव्याकृत प्रश्नों की मीमांसा को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना। अव्याकृत का अर्थ है, जो व्याकरण अर्थात् विश्लेषण के योग्य न हो। ये प्रश्न मानव हित की दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं, न ही अर्थ युक्त हैं। ये प्रश्न हैं– क्या यह लोक शाश्वत या अशाश्वत हैं? क्या यह लोक शाश्वत तथा अशाश्वत दोनों है? क्या यह लोक दोनों ही नहीं है?

***+2 उच्च विद्यालय द्वारिकानगर मुजफ्फरपुर (बिहार)**

क्या यह लोक अन्तवान् या अनन्तवान् है?, क्या यह लोक अन्तवान् तथा अनन्तवान् दोनों हैं?, क्या यह लोक दोनों नहीं हैं?, क्या मरणोपरान्त तथागत होते हैं?, क्या मरणोपरानत तथागत दोनों ही नहीं होते? और क्या जीव और शरीर एक ही है?, क्या जीवन अन्य है ओर शरीर अन्य है? भगवान बुद्ध ने इस प्रश्नों का मौन रहकर यह संकेत दिया कि ये प्रश्न मानव कल्याण के लिए उपयोगी नही हैं। उन्होंने उन्हीं प्रश्नों का समाधान किया जो विराग, विरोध, अनिज्ञा, उपशम और निर्वाण कर लिए उपयुक्त थे। बुद्ध ने तो ऐसे अध्यात्मिक एवं नैतिक ज्ञान का उपदेश दिया जिससे दुःख की निवृत्ति हो।

डॉ० अम्बेडकर ने इस अव्याकृत दृष्टिकोण को इसलिए स्वीकार किया कि आदमी इनकी उलझनों से मुक्त रहकर अपने सामाजिक जीवन को मंगलमय बना सके। निष्कर्षतः यह कहना उचित होगा कि पुरूषार्थ साधक मनुष्य को तात्विक व काल्पनिक प्रश्नों की जटिलता में न उलझ कर वैयक्तिक मन की शुद्धि और सदाचार के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए ताकि समाज व्यवस्था धर्म प्राण बनी रहे। यही कारण है कि डॉ० अम्बेडकर ने अपने बौद्ध धम्म–दर्शन की व्याख्या में यद्यपि ईश्वर, अमर आत्मा, आवागमन, अवतार आदि का खण्डन तो किया, परन्तु उनके विषय में अधिक ने उलझ कर प्रज्ञा तथा शील, करूण एवं मैत्री आदि पक्षों पर अधिक ध्यान दिया। वह स्वयं लोक मांगलिक चेतना से प्रेरित थे ओर लोकानृकम्पी होने के कारण, वह बुद्ध की सद्धर्म देशनाओं के अनुगामी बने।

इसके अतिरिक्त, डॉ० अम्बेडकर ने बुद्धिज्म की मध्यमा प्रतिपद, चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, पारमिताओं की महत्ता, अंहिंसा, आदर्श, कर्म तथा पुनर्जन्म सिद्धान्त, निर्वाण धारणा, वेधिसत्व जीवन और शील–सम्पदा को ही बौद्ध धम्म–दर्शन के मुख्य आधार माना। वे ही मानव प्राणियो का आध्यात्मिक उत्थान, सामाजिक कल्याण और नैतिक उदत्तीकरण कर सके है। भगवान बुद्ध के प्रति अटूट निष्ठा जाग्रत होने पर, बाबा साहेब ने बौद्ध धम्म–दर्शन के बारे मे जो कुछ सही रूप में मालूम किया, उसे अपने काल की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों की दृष्टि से प्रस्तुत किया। भारत के लोग भगवान बुद्ध को भूल गये थे, उनके कल्याण धर्म के बारे में ब्राह्मण पण्डितों ने अनेक विकृतियां पैदा कर दीं और उनके दर्शन को केवल शैक्षणिक पाठ्यक्रम तक ही सीमित कर दिया था। डॉ० अम्बेडकर ने जब बुद्ध के दर्शन तथा धर्म का अध्ययन किया, तो यह पाया कि मानव जीवन में कितने ही संकट क्यों न आएं, कितनी ही विपत्तियों का सामना करना पड़े, बुद्ध के उक्त दार्शनिक विचार में डॉ० साहेब को कहीं पाखण्ड, आडम्बर और कल्पनायें नहीं मिली और न ही उसमे आदमी को कहीं उलझााने की बात कहीं। वैसे दर्शन को अन्धकार में कुछ रहस्यमय खोजने का प्रयास कहा जाता है। लेकिन बौद्ध धम्म–दर्शन सीधा आदमी और समाज से जुड़ा हुआ मानववादी चिन्तन है।

संदर्भ ग्रंथों की सूची

(1) बी० आर० अम्बेडकर : द् बुद्ध एण्ड हित धम्म(1987) पृ•–251
(2) एनिहिलेशन ऑफ कास्ट, पृ• – 51–58
(3) भारत रत्न डॉ० अम्बेडकर और बौद्ध–धर्म, डॉ० भागचन्द्र जैन भास्कर, पृ•– 3–6
(4) डॉ अम्बेडकर और दर्शन, डॉ० राजेन्द्र मोहन भटनागर, पृ•– 37–38
(5) युगपुरूष अम्बेडकर, सीताराम खोड़वाल, पृ•– 11,12
(6) डॉ० अम्बेडकर लाइफ एण्ड मिशन, 1987, धनंजय कीर, पृ•– 253,254

****